Madhepura College Madhepura

Dept. of Education

BNMU, Madhepura

B.Ed 1st year

EPC-2

Drama and Art in Education

भारतीय स्थापत्य एवं वास्तुकला

वास्तुकला का तात्पर्य भवन एवं अन्य विशालकाय निर्माणों से लगाया जाता है,जिसके अन्तर्गत आवासीय मकान , राजभवन , किले , मंदिर , पुल तथा अन्य बिल्डिग शामिल की जाती हैं । भारत में स्थापत्य एवं वास्तुकला की उत्पत्ति सिंधु घाटी की सभ्यता में ही हो गई थी । सिंधु घाटी के भवनों में उत्कृष्ट इंजीनियरिंग के प्रमाण मिलते हैं । समय के साथ इस कला में नये - नये आयाम जुड़ते गये और हिन्दू विशाल से विशालतर भवन एव मंदिर बनाये जाने लगे । भारतीय वास्तुकला एवं स्थापत्य का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

- **सिंधु घाटी की वास्तुकला –**

इस सभ्यता की वास्तुकला एक धर्मनिरपेक्ष वास्तु के रूप में स्थित थी क्योंकि उस समय धार्मिक विविधता का पूर्णतः अभाव था । इस सभ्यता के दो प्रमुख केन्द्रों हड़प्पा तथा मोहन जोदड़ो के वास्तु योजनाकारों ने इनके निर्माण में काफी सूझ - बूझ एवं सतर्कता का परिचय दिया था और इन नगरों की वास्तुयोजना को वर्तमान नगरों की योजना से किंचित न्यून नहीं ठहराया जा सकता । इस काल में

निर्मित दो प्रमुख राजधानी - नगर हड़प्पा तथा मोहन जोदड़ो नगर - विन्यास के उत्तम उदाहरण हैं । इस सभ्यता के विशिष्ट वास्तुकला के उदाहरण हैं- विशाल स्नानागार, धान्यागा, सभा-भवन तथा विद्यालय |इस सभ्यता का स्थापत्य एवं इसकी वास्तुकला उपयोगिता तथा सुन्दरता दोनों ही दृष्टियों से उत्कृष्ट कोटि की है ।

- सिंधु सभ्यता के वास्तुकारों का विभिन्न भवनों के निर्माण में ईंटों के विभिन्न आकार प्रकारों का प्रयोग उल्लेखनीय रहा है । ईंटों के आकार 10 . 25 इंचx5 इंच x2 . 25 इसमें क इंच (अर्यात 4 : 2 : 1 का अनुपात) इसका साक्षात प्रमाण है । पक्की तथा कच्ची दोनों प्रकार की ईंटों का प्रयोग हुआ है ।

• बौद्ध स्थापत्य कला

प्राचीन भारत के वास्तु एवं स्थापत्य कला पर बौद्ध धर्म का विशेष प्रभाव दृष्टिगत होता है । वास्तव में प्राचीन भारत के शासकों ने बौद्ध भिक्षकों के रहने हेतु अनेक बिहार तथा चैत्य बनाये । बुद्ध के मृत्योपरांत उनके अवशेषों को विभिन्न क्षेत्रों में वितरित करके उन पर अनेक स्तूप बनाये गये । इस प्रकार इन भवनों

को सम्मलित रूप से बौद्ध वास्तु कला के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है । कुछ प्रमुख बौद्ध वास्तुकला के उदाहरण इस प्रकार हैं –

चैत्य

कार्ले का चैत्य

भाजा चैत्य

नासिक चैत्य

अजंता के चैत्य

पीतलखोरा का चैत्य

कोंडने का चैत्य

विहार -बौद्ध संघों के निवास स्थान को विहार के नाम से जाना जाता था और ये स्तूप एवं चैत्य की भांति बौद्ध जीवन के एक अंग प्रधान अंग के रूप में बनाए गए थे |ये प्राचीन भारतीय स्थापत्य एवं वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण हैं | मध्यवर्ती भारतीय राज्य बिहार में तो इतने विहार बने थे कि इसका नाम ही बिहार पर गया | यह एक प्रकार का मठ था जिसका संपूर्ण कार्य भार एक आचार्य द्वारा संभाला जाता था |निम्न विहार का निर्माण -

नासिक विहार

भाजा विहार

नहपान विहार

बाराबर की शैल गुफाएं एंव विभिन्न स्तूप (सांची का स्तूप, भरहुत का स्तूप, अमरावती स्तूप, चौखण्डी स्तूप, घमेख स्तूप)बौद्ध स्थापत्य कला के अन्तर्गत ही आते है|

• मंदिर वास्तुकला -

भारत में मंदिर वास्तु का निर्माण काल गुप्त काल से प्रारंभ होता है जब वास्तुकला की सैद्धांतिक संयोजना के साथ भव्य, विशाल, सुंदर एवं कलापूर्ण मंदिरों का निर्माण किया गया | इनका निर्माण इस अर्थ में भी महत्वपूर्ण है कि यह स्थायित्व प्रदान करने वाली सामग्रियों से बने हैं | चूंकि गुप्त शासकों से ब्राह्मण धर्म को संरक्षण प्रदान किया अतएव देवी-देवताओं के लिए बड़ी मात्रा में मंदिरों का निर्माण प्रारंभ किया गया | इनका वास्तुविन्यास बौद्धधर्म से प्रभावित था किंतु बाद में हमारे देश में तीन प्रकार की मंदिर निर्माण शैली अस्तित्व में आयीं-

नागर शैली

द्रविड़ शैली

बेसर शैली